सुशील अग्रवाल

भूमिगत एवं जल-संग्रह का वास्तुशास्त्रीय निर्धारण

जल ही जीवन है, यह तथ्य निर्विवाद रूप से स्थापित है। हम जब भी किसी घर, मकान या भूमि का क्रय करते हैं, तो हम अपनी आर्थिक स्थिति एवं आवश्यकतानुसार स्थान एवं आकार आदि का चयन करते हैं, परन्तु जल की आपूर्ति एवं उपलब्धता का ध्यान तो प्रत्येक स्थिति में परम आवश्यक है।

प्राचीन समय में कुओं आदि से जल लाया जाता है, परन्तु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में स्वतन्त्र घर हो या सोसाइटी का फ्लैट, अधिकांशतया सभी भूमिगत जल पर ही निर्भर हैं। आजकल तो भूमिगत जल के लिये बोरिंग या भूमिगत टैंक का निर्माण भी किया जाता है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार भूमिगत बोरिंगया भूमिगत टैंक का निर्माण किस दिशा में किया जाए और उसके क्या फल होते हैं, इस विषय पर व्यापक विचार किया गया है। वास्तुशास्त्र में साधारणतया हम ईशान कोण (North&East Corner)को जल सम्बन्धित निर्माण के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है। इस लेख में हम शास्त्रीय आधार पर क्या दिशा–निर्देश दिये गए हैं, उस पर विचार कर रहे हैं।

मुहुर्तचिन्तामणि (वास्तु प्रकरण श्लोक 20) के अनुसार :

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः।

सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च संपत्पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम्।।

भावार्थ : यदि घर के मध्य–भाग में भूमिगत जल का निर्माण किया गया हो तो धन का नाश होता है, ईशान आदि में क्रम से पुष्टि, ऐश्वर्य में वृद्धि, पुत्र का नाश, स्त्री का नाश, मृत्यु, संपत्ति प्राप्ति, शत्रु से कष्ट और सुख–प्राप्ति होती है।

अतः उत्तर–पूर्व (ईशान), पूर्व, उत्तर और पश्चिम दिशा को उत्तम माना गया है। उपरोक्त श्लोकार्थ को सरलता से ग्रहण करने के लिए निम्न कूप चक्र के रूप से भी दर्शाया जा सकता है :

ईशान	पूर्व	आग्नेय
पुष्टि	ऐश्वर्य वृद्धि	पुत्र नाश
सुख प्राप्ति	अर्थ नाश	स्त्री नाश
शत्रु से पीड़ा	संपत्ति प्राप्ति	गृह स्वामी की मृत्यु
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य

वास्तुशास्त्र ने अनुसार वास्तु–स्थान पर भूमिगत जलाशय के निर्माण के समय उपरोक्त शुभ दिशाओं का चयन तो करना ही चाहिए, परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भूमिगत जलाशय मुख्य द्वार पर न हो और दीवार से सटाकर नहीं करवाना चाहिये।

भूमिगत जल की व्यवस्था का निर्माण करने के पश्चात जल संग्रह के स्थान का भी विशेष महत्व होता है।

यहाँ पर यह विचार करना आवश्यक है कि जल का संग्रह भूमिगत (underground water tank) में किया जा रहा है या छत के ऊपर के टैंक (overhead water tank) में।

भूमिगत जल संग्रह के सन्दर्भ में ऋषि वराहमिहिर ने अपनी कालजयी रचना बृहत्संहिता के वास्तुविद्याध्याय (श्लोक 119) में कहा है :

प्राच्यादिस्थे सलिले सुतहानिः शिखिभयं रिपुभयं च ।

स्त्रीकलहः स्त्रीदौष्ट्यं नैस्व्यं वित्तात्मजविवृद्धिः ।।

भावार्थ : वास्तु भूमि में पूर्व आदि दिशाओं में जल स्थित हो तो क्रम से पुत्र की हानि, अग्नि का भय, शत्रु का भी, स्त्री कलह, स्त्रियों में दुःशीलता (दुष्टता), निर्धनता, धन की वृद्धि और पुत्रवृद्धि होती है।

अतः जल का संग्रह उत्तर–पूर्व (ईशान) और उत्तरदिशा में ही उत्तम माना गया है। इस श्लोकार्थ को सरलता से ग्रहण करने के लिए निम्न रूप से चित्रांकित किया जा सकता है :

ईशान	पूर्व	आग्नेय
पुत्र वृद्धि	पूर्व की हानि	अग्नि के भय
धन की हानि		शत्रु के भय
निर्धनता	स्त्रियों में दुःशीलता	स्त्रियों में कलह

वाय. नैर्ऋ

वायव्य पश्चिम नैर्ऋत्य

आधुनिक समय में छत पर टंकी आदि लगाकर जलसंग्रह करने का प्रचलन है। ऐसी स्थिति में घर की छत पर दक्षिण–पश्चिम (नैर्ऋत्य कोण) भाग पर भी टंकी आदि लगवानी चाहिए। घर का दक्षिण–पश्चिम यदि शेष भाग से ऊँचा हो, तो वास्तु नियमों के अनुसार ही करना चाहिये। यदि नैर्ऋत्य कोण संभव न हो तो पश्चिम भाग पर भी टंकी आदि लगवायी जा सकती हैं। ये दोनों भाग वास्तु–स्थान के नकारात्मक भाग हैं और इनके उन्नत एवं भारी होने से वास्तु–स्थान पर उर्जा का संतुलन बनता है। किसी भी स्थिति में छत की टंकी ईशान कोण पर नहीं लगवानी चाहिए। ❐

मो : 9810162371

कार्नेलियन के चिकित्सीय गुण :

Healing Ability Of Carnelian

इसे धारण करने से शरीर के घाव जल्दी भरते हैं और शरीर से खून कम बहता है। रक्त संबंधी अन्य विकारों में यह उपरत्न सहायक होता है। यह जातक के अंदर शारीरिक शक्ति का भी पूर्ण रुप से विकास करता है।

लाजवर्त मणि या पत्थर तीनों क्रूर ग्रहों (शनि, राहु और केतु) के दोषों और कुप्रभावों को भी खत्म करता है। व्यक्ति घटना, दुर्घटनानों से बच जाता है। इससे सभी तरह का काला जादू और किया–कराया समाप्त हो जाता है। यह मणि पितृदोष को भी समाप्त कर देती है।

प्राप्त करने के लिए संपर्क करें :

फ्यूचर पॉइंट, ए–3, रिंग रोड, साउथ एक्स पार्ट–1,
नयी दिल्ली–110049

दूरभाष : 011–40541000, 40541020